विश्व-कल्याणकारी बनने के पहले स्व और साथियों के प्रति कल्याणकारी बनो

(विशेष टीचर्स बहनों प्रति)

आज बापदादा के पास सर्व टीचर्स का यादप्यार लेकर गई। तो क्या देखा कि आज बापदादा बहुत रहमदिल स्वरूप से सर्व विश्व की आत्माओं को पॉवरफुल दृष्टि दे रहे थे। मैं भी यह दृश्य देख-देख आगे बढ़ते बापदादा के पास पहुँच गई। बापदादा बोले, आओ मेरे विश्व कल्याणकारी बच्चे आओ। देखो कितनी आत्मायें परेशान हैं, दु:खी हैं। अब इन आत्माओं को बापदादा का जन्मसिद्ध अधिकार मुक्तिधाम का रास्ता बताए मुक्ति दिलाओ। अब तुम सब बच्चों को भी अपने रहमदिल स्वरूप, कल्याणकारी स्वरूप को इमर्ज करना है। सारा दिन हर कर्म करते भी इस महान मन्सा सेवा में बिज़ी रहना है क्योंकि आजकल तुम बच्चों को भी देवियों के रूप में, देवताओं के रूप में ज्यादा याद कर पुकारते रहते हैं। बाप को निराकार रूप से नहीं पुकारते, तो अब इन आत्माओं के ऊपर रहम करो, दया करो,

मर्सीफुल बनो। अब ज्यादा दु:खी नहीं करो।

ऐसे दृश्य दिखाते अनुभव कराते कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची सर्व टीचर्स का क्या समाचार लाई हो। मैं बोली बाबा आजकल तो सबको यही उमंग है कि अब बापदादा को रिटर्न देना ही है। कुछ करके दिखाना है। बापदादा बहुत स्नेह रूप से सुनकर मुस्कुरा रहे थे। और ऐसे लगा जैसे हम सब बापदादा के आगे इमर्ज है और बापदादा देख-देख अपनी मीठी दृष्टि में समा रहे हैं। बड़े स्नेह से बोले मेरे विशेष निमित्त सर्विसएबुल, नॉलेजफुल बच्चे आये हैं। तो बापदादा की इन विशेष बड़े बच्चों में बहुत-बहुत उम्मीदें हैं क्योंकि यह मेरे आशाओं के दीपक हैं। अब जल्दी संगठित रूप में एकव्रता, एक लगन, एकरस स्थिति को सैम्पल रूप में विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष करेंगे। बापदादा तो यही देखने चाहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चे का जो बापदादा का संकल्प वह बच्चों का संकल्प, जो बाप का बोल वह बच्चों का बोल, जो ब्रह्मा बाप का कर्म वह बच्चे का हर कर्म, दूसरा न कोई इस दृढ़ निश्चय को स्वरूप में लावे। अब बापदादा इन बड़ें बच्चों को वायदा नहीं कराने चाहते। वायदा निभाने वाले देखने चाहते हैं। संकल्प किया और स्वरूप बनें। वायदे के फाइल तो बापदादा के पास बहुत बड़े-बड़े हैं लेकिन अब फाइनल फ़रिश्ता स्वरूप देखने चाहते हैं।

जब विश्व कल्याण अर्थ निमित्त बने हो तो क्या स्व और साथियों प्रति, सर्व प्रति कल्याणकारी नहीं बन सकते। अब तो बापदादा यह बचपन की बातें, पुरानी रसम, पुराने संस्कार सुनने-कहने भी नहीं चाहते।

ओ मेरे निमित्त महान आत्मायें अब परिवर्तन की कमाल दिखाओ। तो संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन के नज़ारे सभी के नयनों में, मन में, चलन में, चेहरे में दिखाई दें। यही बापदादा की आप निमित्त बच्चों में श्रेष्ठ आश है। बोलो, फर्स्ट ग्रुप बच्चे – यह फास्ट परिवर्तन की आश पूर्ण कर पास्ट को समाप्त और फ़रिश्ते रूप में प्रत्यक्ष करेंगे और करायेंगे ना! अब तो कारण नहीं निवारण स्वरूप बनो और बनाओ।

ऐसे बहुत मीठी-मीठी दृष्टि देते, बोल बोलते बापदादा ने दोनों दादियों को अपने साथ खड़ा किया और सबसे मिलन मनाया, बाद में बापदादा और दीदी दादियों ने सर्व टीचर्स को अपने वरदानों की वृत्ति द्वारा वरदानों के हाथ से बहुत शक्तिशाली दृष्टि दी और बापदादा ने महावाक्य उच्चारे – सफलता स्वरूप बच्चे, सफलता हो, सफलता हो। यह दृश्य भी बड़ा दिल को आकर्षित करने वाला था।

ऐसे ही सब इमर्ज हुए और मर्ज हो गये। और हम नीचे आ गये।

ओम् शान्ति।